



दिसम्बर 2018

वर्ष : 2 अंक :3

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



संस्थान के लिये नवम्बर का माह अत्याधिक महत्वपूर्ण रहा है, इस माह में कई गतिविधियां हुईं, लेकिन इनमें सबसे महत्वपूर्ण है माननीय श्री राधा मोहन सिंह, केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री का संस्थान में दौरा। माननीय मंत्री महोदय ने इस अवसर पर संस्थान के कर्मचारियों को न केवल संबोधित किया अपितु नेहरू युवा केंद्र, पश्चिम बंगाल



के राष्ट्रीय सेवा स्वयंसेवकों के "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर कौशल विकास उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी उद्घाटन किया। मंत्री महोदय के, इस भ्रमण से पूरे संस्थान में एक सकारात्मकता का संचार हुआ है। इस माह संस्थान ने विश्व मत्स्य दिवस, सांप्रदायिक सद्भाव सप्ताह और झंडा दिवस का भी आयोजन किया। इसके अलावा राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड के साथ मिलकर मत्स्य कृषको के लिए कौशल विकास कार्यक्रम भी चलाये गये। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के रेंचिंग कार्यक्रम के अन्तर्गत मिर्जापुर और बैरकपुर में भारतीय प्रमुख कार्प के बीजो को गंगा नदी में प्रवाहित किया गया। जनजातीय उपयोगना परियोजना के अन्तर्गत मत्स्य प्रग्रहरण के औजारो का सागर द्वीप के आदिवासी मछुआरों के बीच वितरण, पुरलिया के अयोध्या पहाड़ी की चोटी पर जागरूकता प्रदर्शनी और गुवाहाटी में रवा जनजाति के मछुआरों के लिए सीआईएफआरआई पेन की रचना की गयी। इस माह संस्थान में कुल नौ बहाली हुई हैं जिनमे पांच तकनीकी सहायक और चार अवर श्रेणी लिपिक हैं। मैं सभी नए सिफरी परिवार के सदस्यों को बधाई देता हूँ। इसके साथ साथ उनके उज्ज्वल भविष्य की कमाना करता हूँ।



विक्रम

मुख्य शोध उपलब्धियां

- ❖ भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा हालिया किये गये सर्वेक्षण में कावेरी नदी में मत्स्य पालन तकनीकी की मांग को पूरा करने के लिए आयात किए गए विदेशी सफेद झींगे (*लिटोपेनियस वनामेई*) की उपस्थिति दर्ज की गई। इस विदेशी झींगे की उपस्थिति नदी के स्वदेशी जर्मप्लाज्म के लिए एक संभावित खतरा है। इस समाचार ने शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं का व्यापक ध्यान आकर्षित किया है।
- ❖ स्वदेशी मछली की प्रजातियों को पुनर्जीवित करने के लिए, संस्थान द्वारा गंगा नदी में दो स्थानों नबद्वीप और बैरकपुर में देशी जर्मप्लाज्म के 4 लाख मछली के बीजों को प्रवाहित किया।
- ❖ मायानुर जिला करुर की कावेरी नदी के मध्य में संस्थान द्वारा विस्तृत सर्वेक्षण में विदेशी मछली प्रजातियों द्वारा देशी मछली के जीवों के क्रमिक प्रतिस्थापन को देखा गया। नदी के मत्स्य पकड़ में *ओरीओक्रोमिस मोस्संबिकस* (*तिलपिया*) का वर्चस्व पाया गया, जो कुल पकड़ का लगभग 92% था। अफ्रीकी कैटफिश, *क्लारियस गेरिपिनस* की भी काफी अच्छी संख्या में पकड़ दर्ज की गयी (कुल पकड़ का 1.4%)। दक्षिण अमेरिकी सेलफिन कैटफिश *टेरीगोपलिचथ्सयह डिस्जंक्टिवस* (2.1%) की मौजूदगी भी देखी गयी।
- ❖ संस्थान ने नदी में मात्स्यिकी का स्वरूप बनाए रखने के लिए कावेरी नदी में गहरे पूल निवास की भूमिका का अध्ययन किया। अध्ययन में कावेरी नदी के होजनकल जलप्रपात के नीचे गहरे पूल (गहराई 12.8-15.2 मीटर) में अच्छे मत्स्य आवास का पता चला। यहाँ पर छह प्रकार के चारों का उपयोग कर के मछलियों को पकड़ा गया था। *लेबियो बोगुट* को बड़े पैमाने पर *वाल्गो अट्टू* जैसी मांसाहारी मछलियों को पकड़ने के लिए जिन्दा चारे के रूप में प्रयोग किया गया था।
- ❖ भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने खुले पानी में *कतला-कतला* मछलीयों में प्रदूषकों के उप-घातक स्तरों का पता लगाने के लिए जीन विशिष्ट प्राइमरों टीबीपी, आरएगी 1, वीटीगी, एचएसपी 70, सीयू-जेडएन एसओडी, ट्रांसफेरिन, आईजीएफ 1, प्यरुवेट काइनेज, टीएलआर-2 और एनओडी-2 का क्यू पीसीआर का उपयोग करके पता लगाया गया। इसका उपयोग विभिन्न पर्यावरणीय तनावों से मछली के स्वास्थ्य पर इनका पड़ने वाले प्रभाव के प्रारंभिक संकेतक के रूप में किया जा सकता है।
- ❖ अक्टूबर 2018 के महीने के दौरान इलाहाबाद में गंगा नदी से भारतीय प्रमुख कार्प की पकड़ 1.09 टन होने का अनुमान लगाया गया है। भारतीय प्रमुख कार्प पकड़ में *सिरसिनस मृगला*

(44.74%) ने उच्चतम योगदान दिया इसके अलावा *कतला कतला* (38.97%), *लेबियो रोहिता* (11.35%) और *लेबियो कैलेबसु* (4.94%) का अनुमान है। टिहरी (डोबराचट्टी) में महसीर की आवक 4.54 टन अनुमानित थी।

- ❖ पलायार जलाशय (तेलंगाना) में मत्स्य विविधता बहुतायत की खोज में कुल 25 मछली प्रजातियों को दर्ज किया गया। तीन शिशिल्ड प्रजातियां *ओरोक्रोमिस निलोटिकस*, *एट्रोप्लस सर्टेंसिस* और *ई. मैक्युलाटस* की बहुतायत मॉनसून पूर्व की पकड़ के दौरान देखी गयी, जबकि मानसून के दौरान *स्पेटा सेंगला* और *चंदा नामा* की पकड़ ज्यादा थी।
- ❖ पारिस्थितिक रूप से तनावग्रस्त बाढ़ वाले मैदान (भोमरा बील, पश्चिम बंगाल) में जलवायु परिवर्तनशीलता का प्रभाव पादप प्लवक के नैनो समूहों में देखा गया और पाया गया कि नैनो प्लवक (14.34%), सूक्ष्म प्लवक (50.2%) और मेसो प्लवक (35.45%) की तुलना में काफी कम उपलब्ध होती है।
- ❖ हिमाचल प्रदेश के गोबिंद सागर जलाशय के पांच वर्षों के दौरान मत्स्य पकड़ के आंकड़ों का विस्तृत विश्लेषण करने पर मछली उत्पादन में भारी गिरावट का पता चला। 2013-14 के 1491.85 मीट्रिक टन उत्पादन, 2017-18 में 471.78 मीट्रिक टन तक गिर गया, इसी प्रकार सिल्वर कार्प मत्स्य का उत्पादन 2013-14 के 1161 मीट्रिक टन से 2017-18 में 264.65 मीट्रिक टन तक गिर गया।
- ❖ पश्चिम बंगाल के सागर द्वीप की विशालखी नहर में स्थापित पेन में कुल 4,420 (68 किलोग्राम) मत्स्य बीज का भंडारण किया गया। इनमें *लेबियो रोहिता*, *कतला कतला* और *ग्रास* कार्प मछली की प्रजातियों में क्रमशः 16.2 ग्राम, 14.8 ग्राम और 21.25 ग्राम वजन की शामिल की गयी थी।
- ❖ संस्थान में स्थापित पुनःचक्रिय जलीय कृषि प्रणाली में सिंधी मछली (*हेटेरोपनेस्टेस फॉसिलिस*) को पिंजरों के लिए संचयन सामग्री के रूप को सफलतापूर्वक बढ़ा किया गया (घनत्व: में 2.5 नग / लीटर) इनका औसत वजन 60 दिनों में 0.85 ± 0.23 ग्राम से बढ़कर 8.5±0.35 ग्राम हो गया, इस दौरान उत्तरजीविता 79% और संगत वजन में बढ़ोत्तरी 85.8% देखी गयी।
- ❖ अमरकंटक से अंबेटा समुद्रमुख तक के 28 सैपलिंग स्टेशनों के बीच “हाइड्रोलॉजिकल दूरी” की गणना के लिए नर्मदा नदी सदूर सम्बेदी बिम्ब का उपयोग करके रेखांकित किया गया है। इसका उपयोग भूस्थानिक मॉडल में उष्णकटिबंधीय नदियों के लिए पर्यावरणीय संबंधों को चिह्नित करने के लिए किया गया।

मत्स्य प्रग्रहरण के औजारों का सागर द्वीप के आदिवासी मछुआरों के बीच वितरण और जागरूकता कार्यक्रम

श्री बंकिम हाजरा, विधायक, सागर द्वीप, पश्चिम बंगाल ने सागर द्वीप के मानसद्वीप गाँव में दिनांक 8.11.2018 को “अनुपयोगी /परित्यक्त जलक्षेत्रों में वैज्ञानिक विधि द्वारा मछली पालन” पर जागरूकता कार्यक्रम का उद्घाटन



किया। भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर सागर द्वीपों के 3 गांवों के ग्रामवासियों के साथ कार्य कर रहा है और इन्ही गांवों के 100 से अधिक आदिवासी मछुआरों ने इस जागरूकता



कार्यक्रम में भाग लिया। भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी



अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने सागर द्वीप के आदिवासी मछुआरों को अप्रयुक्त जल निकायों में वैज्ञानिक विधि द्वारा

मछली पालन पर जागरूक बनाया। उन्होंने वैज्ञानिक विधि द्वारा मछली पालन पर मछुआरों के संदेहो को दूर किया है और मछुआरों को सलाह दी कि वे मछली पालन से होने वाले लाभ से कुछ राशि बचाकर प्रत्येक वर्ष निवेश के रूप में इस्तेमाल करें। डॉ. दास ने मछुआरों को भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान से निरंतर तकनीकी सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया। उन्होंने सागर द्वीप के मछली



किसानों को तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए स्व-नियोजित "मत्स्य मित्र" का एक कैडर बनाने पर भी जोर दिया। डॉ. दास ने कहा कि भाकृअनुप केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में मत्स्य मित्रों को प्रशिक्षण प्रदान करेगा। सागरद्वीप के विधायक श्री बंकिम हाजरा ने सागर द्वीप में मछली पालन के माध्यम से आदिवासी मछुआरों की आजीविका के लिए संस्थान के द्वारा दी जा रही सहायता और समर्थन के लिए भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान को धन्यवाद दिया। सागर ब्लॉक की अन्य गणमान्य



व्यक्तियों के साथ श्रीमती अनिता मैती, पंचायत प्रधान ने इस अवसर पर उपस्थित होकर सागरद्वीप में भाकृअनुप केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा जारी गतिविधियों का उल्लेख किया। भाकृअनुप केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने सागर द्वीप समूह के आदिवासी मछुआरों को मत्स्य प्रग्रहरण के जाल (10 नग कास्ट जाल) वितरित किए। डॉ. पी. के. परिदा, नोडल अधिकारी, जन जातीय उप योजना, श्री सी. एन. मुखर्जी और श्री सुजीत चौधरी ने इस जागरूकता कार्यक्रम का समन्वय किया।

माननीय श्री राधा मोहन सिंह, केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री का संस्थान में आगमन



माननीय श्री राधा मोहन सिंह, केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री ने 16 नवंबर, 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, का दौरा किया। डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक ने उनका स्वागत किया और विभिन्न शोधों के बारे में जानकारी दी। निदेशक ने भारत में अंतर्स्थलीय मछुआरों की आय और आजीविका बढ़ाने की दिशा में संस्थान द्वारा की गई विस्तार गतिविधियाँ के बारे में भी बताया। निदेशक ने उन्हें इस संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों का भारत के अलग अलग हिस्सों में अंतर्स्थलीय मत्स्य उत्पादन में वृद्धि पर इसके प्रभाव के बारे में भी जानकारियाँ दी। साथ ही साथ निदेशक महोदय ने संस्थान द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अन्य संस्थानों के साथ चल रही परियोजनाओं के बारे में भी अवगत कराया जिसके द्वारा संस्थान



अतिरिक्त वित्तीय लाभ उत्पन्न कर रहा है। इसी क्रम में निदेशक ने माननीय मंत्री जी को संस्थान में भारत सरकार द्वारा लक्षित योजनाओं के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन के बारे में भी अवगत कराया।

इस अवसर पर किसानों और वैज्ञानिकों के साथ बातचीत करते हुए, माननीय मंत्री जी ने इस संस्थान द्वारा विकसित मत्स्य प्रौद्योगिकियों के प्रभावी कार्यान्वयन से किसान की आय को दोगुना करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

उन्होंने सभा को बताया कि सरकार ने भारत में समुद्री और अंतर्स्थलीय मत्स्य विकास और कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए, नीली क्रांति के लिए 3000 करोड़ का बजट की केंद्रीय महत्वपूर्ण परियोजनाओं के



लिए आवंटित किया है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार 2022 तक किसानों की आय को दोगुनी करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है और इसके लिये कौशल विकास, तकनीको का प्रदर्शन और प्रौद्योगिकी प्रसार के विभिन्न कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

माननीय मंत्री ने संस्थान द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की और राजस्व सृजन के लक्ष्य को पार करने के लिए संस्थान को बधाई दी। वैज्ञानिक समुदाय को अधिक राजस्व उत्पन्न करने के लिए कड़ी मेहनत करने का सुझाव दिया। मंत्री जी ने किसान और विद्यार्थियों के सर्वग विकास के लिए वैज्ञानिको को मार्गदर्शन भी दिया। उन्होंने किसानों की स्थिति में हो रहे सुधार के लिए भाकृअनुप के कार्यों की प्रशंसा की और दूरस्थ किसानो को वैज्ञानिक कार्यों से जोड़ने की सलाह भी दी।



माननीय मंत्री ने नेहरू युवा केंद्र, पश्चिम बंगाल के राष्ट्रीय सेवा स्वयंसेवकों के "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर कौशल विकास उन्मुखीकरण



प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम के तहत, एक हजार स्वयंसेवकों को अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन पर प्रशिक्षित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम नेहरू युवा केंद्र, पश्चिम बंगाल के सहयोग से भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था।

बैठक में नेहरू युवा केंद्र, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के निदेशक श्री नवीन नायक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक और वरिष्ठ अधिकारी, नेहरू युवा केंद्र के स्वयंसेवक और पश्चिम बंगाल के अनेक मधुआरे भी उपस्थित थे।

केरल में "आजीविका सुधार के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड द्वारा प्रायोजित और कौशल विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत "आजीविका सुधार के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 14 नवंबर से 16 नवंबर 2018 के दौरान भाकृअनुप-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के परिसर, कोच्चि में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान बैरकपुर द्वारा विकसित, उत्पादन वृद्धि रणनीतियों का अवलोकन करना और मछुआरों को वैज्ञानिक तरीकों से मत्स्य प्रबंधन सीखना था। कौशल विकास कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ.



ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, (भाकृअनुप-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान) ने डॉ. सीमा सी., मत्स्य विस्तार अधिकारी, एर्नाकुलम, डॉ. रानी पलानीस्वामी, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी,



भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि केंद्र तथा अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में किया गया। निदेशक, (भाकृअनुप-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान) ने अपने उद्घाटन भाषण में अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों के संरक्षण के महत्व और उत्पादन बढ़ाने के लिए स्वदेशी मछली पालन क्रियाओं को बढ़ावा देने पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि केरल में बाढ़ की स्थिति के दौरान अफ्रीकी कैटफिश, गैरिफ़, अरैपिमा और पाकु जैसी मछलियों को पकड़ में देखा गया था, जो यह दर्शाता है कि केरल में गैर कानूनी रूप से अवैध मछलियों का पालन किया जा रहा है। मछुआरों को जिम्मेदारी के

साथ मत्स्य नियमों का पालन करना चाहिए। इस कार्यक्रम में 38 मछुआरों ने भाग लिया। कार्यक्रम में संबंधित विषयों के विशेषज्ञों द्वारा क्लास रूम सत्र शामिल थे इसके अलावा प्राकृतिक तालाबों में पिंजरों में मत्स्य पालन करने के लिए तालाबों का दौरा भी किया गया। जहां आठ पिंजरों में पंगोसियस प्रजाति, गिफ्ट और एत्रोप्स सुरटेंसिस का मत्स्य पालन चल रहा था। प्रशिक्षण कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. रानी पलानीस्वामी, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभारी अधिकारी, भाकृअनुप-



केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि केंद्र द्वारा किया गया था और डॉ. दीपा सुधीसन और श्रीमती थैम्सा थेरसा पॉल



वैज्ञानिकों, द्वारा सह-समन्वित किया गया।

संस्थान मुख्यालय पर विश्व मत्स्य दिवस का आयोजन

21 नवंबर को खाद्य और कृषि संगठन (FAO) ने विश्व मत्स्य दिवस के रूप में घोषित किया गया है। इस अवसर पर, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 20 नवंबर, 2018 को विश्व मत्स्य दिवस मनाया। इस दिन को यादगार बनाने के लिए संस्थान ने दो कार्यक्रमों; "गंगा नदी में मछली पालन और मछली जैव विविधता का संरक्षण" और "लघु स्वदेशी मछली (एसआईएफ) पालन और संरक्षण द्वारा मछुआरों के पोषण और आजीविका की सुरक्षा" की व्यवस्था की। श्री प्रदीप बागेला, नेहरू युवा केंद्र के उपाध्यक्ष, श्री नवीन नायक, निदेशक, नेहरू युवा केंद्र, और सुश्री माधवी अग्रवाल, नियामक मण्डल सदस्य, नेहरू युवा केंद्र इस कार्यक्रम के लिए विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस दिन की शुरुआत भारत सरकार के "नमामि गंगे" परियोजना के तहत रेंचिंग कार्यक्रम के साथ हुई, जिसमें संस्थान के



निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने गंगा नदी में भारतीय प्रमुख कार्प के 1.5 लाख मछली बीजों को प्रवाहित किया। इसके बाद, संस्थान के सभागार में संस्थान के निदेशक और उपस्थित अतिथियों द्वारा मुख्य कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य मछुआरों के बीच जागरूकता फैलाना था। एक बातचीत सत्र के दौरान संस्थान के निदेशक और विशिष्ट अतिथियों ने मछुआरों के साथ मछली संरक्षण और लघु



स्वदेशी मछलियों के पालन पोषण मूल्यों के बारे में अपने विचार आदान प्रदान किये। श्री प्रदीप बागेला ने कार्यक्रम में उपस्थित मछुआरों और ग्रामीण युवाओं को आगामी भविष्य में उद्यमशीलता की गतिविधि के रूप में मत्स्य पालन करने के लिए प्रेरित किया। पोषण सुरक्षा के लिए लघु स्वदेशी मछली पालन और संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए सुंदरवन के



मछुआरों के बीच हापा वितरित किए गए। संस्थान ने 14 नवंबर से प्रारम्भ

हुये "सहकारी सप्ताह" के अवसर पर विशेष चर्चा सत्र की व्यवस्था की। इस आयोजन में "अकीपुर दरबसिनि मछुआरा समाज" और "हिंगलगंज कृषि समाज" के मछुआरे उपस्थित थे और सबने मत्स्य पालन पर सहकारिता के महत्व के बारे में अपने अनुभव साझा किए। इस अवसर पर सुंदरवन, उत्तर 24 परगना, हावड़ा और ओडिशा के मयूरभंज जिले से लगभग 130 मछुआरों ने इस सत्र में भाग लिया। समानांतर रूप से,



राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड प्रायोजित मछुआरों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम और नेहरू युवा केंद्र के सहयोग से ग्रामीण युवाओं के लिए प्रशिक्षण भी संस्थान में हो रहे हैं। इस कार्यक्रम के आयोजन के



माध्यम से संस्थान ने किसानों की आय दुगनी करने के लिए भारत सरकार के सहयोग से एक विशेष कदम उठाया।

राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड प्रायोजित कौशल विकास कार्यक्रम का संस्थान में आयोजन

“लघु स्वदेशी मछली पालन और आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए संरक्षण” पर 18- 20 नवंबर 2018 को बैरकपुर में भाकृअनुप- केंद्रीय



अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान और सुंदरवन के 26 मछुआरों एवं अन्य 24 मछुआरों के लिए एक कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, हैदराबाद, तेलंगाना सरकार द्वारा प्रायोजित था। सीएसएस ब्लू रेवोल्यूशन स्कीम के तहत इसमें प्रशिक्षण का आयोजन मछुआरों की आवश्यकता के आधार पर किया गया क्योंकि उनके पास लघु स्वदेशी मछलियों (एसआईएफ) के पालन के लिए एक विशाल क्षमता वाले जल संसाधन हैं। प्रशिक्षुओं



को एसआईएफ पालन और संरक्षण के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया जिसमें एसआईएफ पालन के लिए मिट्टी और जल रसायन विज्ञान, महत्वपूर्ण लघु स्वदेशी मछलियों के निवास स्थान, आजीविका सुरक्षा के लिए लघु स्वदेशी मछलियों का पालन, लघु स्वदेशी मछलियों के पालन का आर्थिक मूल्यांकन, फीड और फीडिंग प्रबंधन, मछली रोग और चिकित्सीय शामिल हैं। देसी मछलियों का मूल्य, प्रशिक्षुओं के लिए पानी और मिट्टी की गुणवत्ता के विश्लेषण और संस्थान स्थित के पुनःचक्रिय जलीय कृषि प्रणाली (आरएएस) पर प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की गई थी। जो छोटे स्तर पर लघु स्वदेशी मछलियों के पालन को बढ़ावा देने के लिए मत्स्यजीवी महिलाओं को हापा भी वितरित किए गए थे। मछुआ महिलाओं ने 20 नवंबर को विश्व मत्स्य दिवस के अवसर पर



'नमामि गंगे' परियोजना के तहत 'रेंचिंग कार्यक्रम' में भी भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागियों से प्रतिक्रिया लेने के पश्चात यहाँ कार्यक्रम समाप्त हुआ जिसमें संस्थान के निदेशक ने प्रशिक्षुओं के साथ बातचीत की और उन्हें आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए सुंदरवन क्षेत्र में एसआईएफ पालन और संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. अपर्णा रॉय, सुश्री गुंजन

कर्नाटक, सुश्री निरूपदा चानु, सुश्री प्रज्ञा आर बेहरा और सुश्री सुकन्या सोम द्वारा किया गया था।



सांप्रदायिक सद्भाव अभियान सप्ताह और झंडा दिवस का आयोजन

सांप्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा और सुदृढ़ करने के लिए, भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 19-25, नवंबर 2018 के दौरान सांप्रदायिक सद्भाव अभियान सप्ताह और झंडा दिवस मनाया। 19 नवंबर को सप्ताह भर चलने वाले कार्यक्रमों की शुरुआत राष्ट्रीय एकीकरण के संकल्प की प्रतिज्ञा के साथ की गई। 20 नवंबर को सांप्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए संस्थान के सभी कर्मचारियों के बीच एक संवेदीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने इस सर्व धर्म समभाव के नेक काम को बढ़ावा देने के लिए सभी कर्मचारियों से

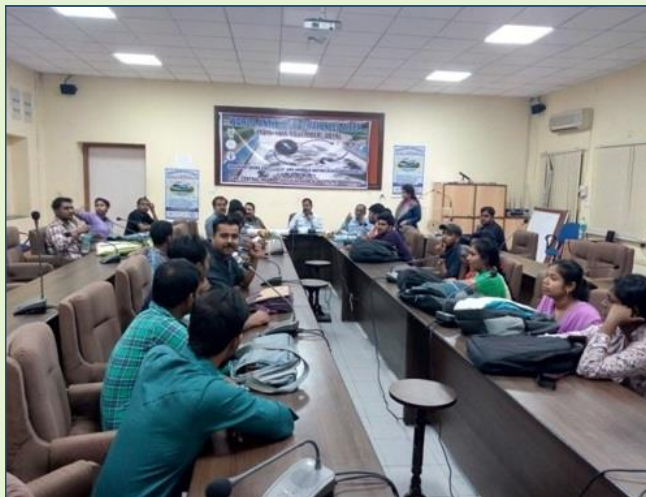


अपील की। 22 नवंबर को झंडा दिवस के रूप में मनाया गया और एक स्वैच्छिक कोष द्वारा नकदी जुटाने का अभियान चलाया गया, जिसमें संस्थान के कर्मचारियों ने उत्साह और उल्लास के साथ योगदान दिया। 24 नवंबर को इसका समापन समारोह आयोजित किया गया जिसके अन्तर्गत 'सांप्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता' पर एक परस्पर संवादात्मक चर्चा सत्र आयोजित किया गया था। संवादात्मक सत्र में, कई कर्मचारियों ने अपने विचार व्यक्त किए, जिसमें धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिकता और अहिंसा के विषय शामिल थे।



विश्व एंटीबायोटिक जागरूकता का आयोजन

"एंटीमाइक्रोबियल रेसिस्टेंस इन फिशरीज एंड एकाकल्चर प्रोजेक्ट" के तहत विश्व एंटीबायोटिक जागरूकता सप्ताह (AWWA) 12 से 18 नवंबर, 2018 के दौरान भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में मनाया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने श्री नवीन नायक, निदेशक, नेहरू युवा केंद्र, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के अनुसंधान कर्मचारियों, और पश्चिम बंगाल के युवा और मत्स्य किसानों



की उपस्थिति में किया। इस के अंतर्गत डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, डॉ. अमिया कुमार साहू, प्रधान अन्वेषक और डॉ. ए.के. बेरा सह अन्वेषक ने एंटीबायोटिक दवाओं का विशेष रूप से जलीय कृषि और मत्स्य पालन में उपयोग, मछली पालन में रोगजनकों के महत्व एंटीबायोटिक प्रतिरोध विकास के तरीके, मत्स्य पालन में एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग और दुरुपयोग पर कॉलेज ऑफ फिशरीज, मैंगलोर, के छात्रों (35 नं.) पश्चिम बंगाल के युवाओं (50) और मत्स्य किसानों (50 नं.) के लिए जागरूकता व्याख्यान दिये। आगतुकों और स्थानीय लोगों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए रोगाणुरोधी प्रतिरोध



(एएमआर) पर संदेश, बैनर और पोस्टर आदि को विभिन्न स्थानों / क्षेत्रों में जागरूकता बढ़ाने के लिए लगाया गया।



जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में हितधारकों ने आर्द्रभूमि मछली पालन की भेद्यता का आकलन किया

बाढकृत आद्रक्षेत्र जैविक रूप से संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र है और इस पर जलवायु परिवर्तन का सबसे अधिक प्रभाव माना जाता है। भारत में वृहद बाढकृत आद्रक्षेत्र संसाधन (क्षेत्र: 0.5 मिलियन हेक्टेयर) के साथ एक संपन्न और अनूठा पारिस्थितिकी तंत्र है जो मछलीयों की जैव विविधता का पोषण और समर्थन करता है। और लाखों मछुआरों की आजीविका के साथ जरूरी पोषक खानपान मुहैया भी करता है। इसमें



मत्स्य उत्पादन की व्यापक संभावनाएं हैं, लेकिन कई कारणों से संभावित और वर्तमान मत्स्य उत्पादन के बीच व्यापक अंतर है। तलछट, प्रदूषण,



अतिक्रमण, नदी संपर्क की हानि, मैक्रोफाइट संक्रमण और जलवायु परिवर्तनशीलता के कारण संसाधन तनाव में हैं। पिछले कुछ दशकों के दौरान, देश ने जलवायु परिवर्तन, तापमान में उतर चढ़ाव अनियमित वर्षा और चरम जलवायु घटनायें देखी है। भारत में बाढकृत आर्द्रक्षेत्र मत्स्य पालन के लिए दीर्घकालिक मात्रात्मक आंकड़ों की कमी के कारण जलवायु परिवर्तन के असर का मत्स्य पालन पर आकलन करना मुश्किल होता है। इस संदर्भ में, भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के एक वैज्ञानिक दल ने जलवायु परिवर्तन का आद्रक्षेत्र मछलियों की भेद्यता का आकलन करने के लिए निकरा परियोजना के तहत 19-24 नवंबर 2018 के दौरान हितधारकों के दृष्टिकोण पर जोर देने के साथ प्रश्नावली आधारित सर्वेक्षण किया। पश्चिम बंगाल के मालदा और मुर्शिदाबाद जिलों के 12 बाढकृत आद्रक्षेत्र से संबंधित 200 से अधिक मछुआरों का साक्षात्कार लिया गया। अधिकांश मछुआरों की राय है कि जैवविविधता और स्वदेशी मछलियों की पकड़ में काफी गिरावट हुई है इसके अलावा लिंक चैनल का



बंद होना, आद्रक्षेत्र की गहराई और क्षेत्र में कमी तथा स्वतः भर्ती की विफलता है। उन्होंने तापमान में वृद्धि, लू और अनिश्चित वर्षा में भी परिवर्तनों को देखने का दावा किया है।

बेसलाइन की जानकारी पारिस्थितिक मापदंडों, संचयन विवरण, मछली उत्पादन, उत्पादकता, मछली विविधता, लघु स्वदेशी मछली, नाव और जाल, संस्थागत व्यवस्था आदि पर आधारभूत जानकारीयों इकट्ठी की गई। अधिकांश आद्रक्षेत्र में भारतीय प्रमुख कार्प और चीनी कार्प संग्रहित कर और पकड़ी जा रही है। एकत्र किए गए आंकड़ों का उपयोग, पारिस्थितिक रूप से विभिन्न प्रबंधन व्यवस्था वाली आद्रक्षेत्र की भेद्यता सूचकांक के आकलन के लिए जोखिम, संवेदनशीलता और अनुकूलन क्षमता का उपयोग कर के किया जाएगा। मछुआरों द्वारा सामना किए जाने वाले प्रमुख मुद्दे, जलवायु परिवर्तनशीलता, तलछट, मत्स्य में बीमारी का प्रकोप, तकनीकी विशेषज्ञता की कमी, पालन आधारित मत्स्य पालन, अपर्याप्त जैव सुरक्षा उपाय, खराब सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्रमुख मुद्दे पाये गये। सर्वेक्षण के दौरान उत्पन्न आंकड़े बाढकृत आर्द्रभूमि में मत्स्य पालन के स्थायी प्रबंधन कार्य योजना के निर्माण के लिए और रणनीतिक ज्ञान आधारित प्रबंधन अभ्यास के सूत्रीकरण के लिए उपयोगी होंगे। जलवायु परिवर्तनशीलता के कारण आद्रक्षेत्र मत्स्य पालन के जोखिम को कम करने के लिए यह आंकड़े, नीति निर्माताओं को उचित रणनीति विकसित करने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार बन सकते हैं। भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के इस वैज्ञानिक दल में डॉ. यू.के. सरकार, प्रधान अन्वेषक, निकरा श्री मिशाल पी., वैज्ञानिक सह अन्वेषक और निकरा के शोध छात्र शामिल थे।

मिर्जापुर में संस्थान द्वारा आयोजित गंगा नदी और जन जागरूकता कार्यक्रम में मछली के बीज का चलन

भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, इलाहाबाद ने मिर्जापुर में गंगा नदी के तट के गयाराम पुर घाट पर 26 नवंबर, 2018 को जन-जागरूकता कार्यक्रम किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गंगा नदी से जुड़ी विभिन्न समस्याओं पर हितधारकों के बीच जागरूकता बढ़ाना था। इस अवसर पर मिर्जापुर में गंगा नदी के राम गंगा घाट, में 10000 भारतीय प्रमुख कार्प की अणुलिकाओं को



नदी में प्रवाहित किया गया।

डॉ. धर्म नाथ झा ने सभी अतिथियों और उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए लाखों मछुआरों कि आजीविका सुनिश्चित करने के लिए गंगा नदी की जैव विविधता के संरक्षण की बहाली के लिए विभाग की प्रतिबद्धता को व्यक्त किया। डॉ. रमा शंकर श्रीवास्तव, (कार्यवाहक प्रमुख) भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, इलाहाबाद केंद्र के ने पिछले वर्षों के दौरान गंगा नदी में गहराते संकट को हल करने के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम की भूमिका और कार्य समन्वयन पर संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने नमामि गंगे कार्यक्रम को पूर्ण समाधान के रूप में बताया है।



बांधों के जल प्रवाह में बाधा और औद्योगिक एवं सीवेज अपशिष्टों नदी के जल में मिलाना उसकी गुणवत्ता और मात्रा पर प्रतिकूल प्रभाव डालते है। जलीय जीव जन्तुओं की मांग को पूरा करने लिए जल का निरंतर प्रवाह



और हितधारकों के पीने के लिए पानी से किसी भी तरह का समझौता नहीं किया जा सकता है।

इस अवसर पर वैज्ञानिकों और शोध छात्रों सहित संस्थान के कर्मचारियों ने एक "रेंचिंग कार्यक्रम" किया और इस कार्यक्रम में डॉ. धर्म नाथ झा, डॉ. वेंकटेश आर. ठाकुर, डॉ. जीतेन्द्र कुमार, डॉ. कल्पना, श्री एस. के. श्रीवास्तव, श्री एस. आर. मीणा, श्री एच. वर्मा, श्री एस. के. वर्मा, डॉ. एस. के. मिश्रा और श्री ए. के. पांडे ने भाग लिया और अपने विचार व्यक्त किए।

बैठक

संस्थान ने हिल्सा और अन्य स्वदेशी प्रजातियों के मत्स्य संरक्षण और मत्स्य प्रग्रहण के लिये एक जागरूकता शिविर का आयोजन स्वरूपगंज घाट, नबाद्वीप, पश्चिम बंगाल में 6 नवंबर, 2018 को में किया। इसमें 150 मछुआरों के भाग लिया संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा मछली पकड़ने के संबंध में चर्चा की गयी।

9 नवंबर 2018 को संस्थान ने एसजेवीएन लिमिटेड के साथ मिलकर "नैटवर मोरी एचई परियोजना के निर्माण के कारण मत्स्य प्रजातियों के अवरुद्ध प्रवासी गमनागमन पर संभव और व्यवहार्य विकल्पों पर अध्ययन" पर आधारित परामर्श परियोजना बैठक में भाग लिया।

संस्थान ने 14 नवंबर, 2018 को नई दिल्ली में जल संसाधन मंत्रालय और "राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन" द्वारा आयोजित विश्व जीआईएस दिवस पर एक ब्रेन स्टॉर्मिंग सत्र में भाग लिया।

संस्थान ने 18-20 नवंबर, 2018 के दौरान राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड प्रायोजित कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 50 मछुआरों (21 मछुआरों सहित) को सुंदरवन से 'आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए छोटे स्वदेशी मछलियों के संरक्षण और पालन पर जानकारी दी गई।

संस्थान ने 20 नवंबर 2018 को कंसल्टेंसी प्रोजेक्ट के निर्माण पर कोलश इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के साथ बैठक में भाग लिया।

संस्थान के वैज्ञानिकों ने "सहकारी समिति सप्ताह" के अवसर पर 20 नवंबर को रवीन्द्र भवन में एक प्रदर्शनी में भाग लिया।

संस्थान ने विश्व मछली दिवस, 20 नवंबर, 2018 को नदी पर एक कार्यक्रम आयोजित किया जहां महिला मछुआरों द्वारा दास पारा घाट, बैरकपुर में गंगा नदी में लगभग 2 लाख बीज प्रवाहित किये गए।

भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने पशु चिकित्सा विज्ञान कॉलेज, पश्चिम बंगाल पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्व विद्यालय, कोलकाता द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी और VIII वीं आईएमएसएसीओएन-2018 "मांसपेशियों में खाद्य प्रसंस्करण के लिए नवोन्मेष तकनीकी " में 22 नवंबर, 2018 को भाग लिया।।

संस्थान के वैज्ञानिकों ने विश्व मत्स्य दिवस के अवसर पर 21 नवंबर, 2018 को पटना में एक प्रदर्शनी में भाग लिया।

भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 22 नवंबर को जनजातीय उपयोजना के तहत भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित पश्चिम बंगाल के पुरुलिया में अयोध्या पहाड़ी की चोटी पर जागरूकता प्रदर्शनी में भाग लिया।

जनजातीय उपयोजना कार्यक्रम के तहत भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने रवा जनजाति के 30-40 मछुआरों के लाभ के लिए लगभग 4000 मछलियों को संचयन करने के उद्देश्य से बोरजोंग बिल (आक्षेत्र) में 0.1 हेक्टेयर सीआईएफआरआई पेन स्थापित किए।

नयी बहाली

तकनीकी सहायक

इस माह संस्थान में पांच तकनीकी सहायक (T-3) और चार अवर श्रेणी लिपिक की नई बहाली हुई है



श्रीमती सुमेधा दास, (तकनीकी सहायक)की तैनाती 2 नवम्बर 2018, को संस्थान में हुई। श्रीमती दास ने हिन्दी में परास्नातक तथा हिन्दी में मास्टर ऑफ फ़िलॉसफ़ि, हिन्दी में बी.एड और अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा किया है। माध्यमिक स्तर (सीबीएससी) के विद्यालय में 3 साल पढ़ाने का उनका पूर्वानुभव रहा।



श्री कौशिक मण्डल, (तकनीकी सहायक)की तैनाती 13 नवम्बर 2018, को संस्थान में हुई। श्री मण्डल बयोलॉजी में स्नातक है, और सूचना प्रद्योगिकी और अनुप्रयोग में डिप्लोमा हासिल किया है। उन्होंने गैर शिक्षण कर्मचारी के रूप में उच्च माध्यमिक विद्यालय में काम किया।



श्री अंजोन कुमार तालुकदार, (तकनीकी सहायक)की तैनाती 2 नवम्बर 2018, को संस्थान में हुई। श्री तालुकदार माइक्रोबायोलॉजी में परास्नातक तथा सूचना प्रयोद्विकी में डिप्लोमा किए हुए हैं। उन्होंने अकुट लिंफोब्लास्टिक ल्यूकेमिया प्रोटियोमिक्स में अनुसंधान कार्य किया।



श्रीमती संगीता चक्रवर्ती, (तकनीकी सहायक)की तैनाती 12 नवम्बर 2018, को संस्थान में हुई। श्रीमती चक्रवर्ती जीव विज्ञान में परास्नातक है और बी.एड किया है। उन्होंने वाग्देवी विलास इंस्टीट्यूट में अनुसंधान कर्ता के रूप में काम किया।



सुश्री सदरुपा भौमिक, (तकनीकी सहायक)की तैनाती 2 नवम्बर 2018, को संस्थान में हुई। सुश्री भौमिक जूलोजी में परास्नातक है। उन्होंने एसआरएफ के रूप में आईसीआर सीफा (रहरा) में 'आउटरिच रिसर्च प्रोजेक्ट ऑन न्यूट्रीएंट प्रोफिलिंग ऑफ फिश'पर काम किया है।

अवर श्रेणी लिपिक



सुश्री अंकिता घोष, (अवर श्रेणी लिपिक)की तैनाती 14 नवंबर 2018, को संस्थान में हुई। सुश्री घोष सोशल वर्क में परास्नातक है।



श्री देवाशीष आचार्या, (अवर श्रेणी लिपिक)की तैनाती 16 नवंबर 2018, को भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में हुई। श्री आचार्या ने सूचना प्रद्योगिकी में इंजीनेरिंग किया है।



सैयद अबोल कोबी, (अवर श्रेणी लिपिक)की तैनाती 13 नवंबर 2018, को भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में हुई। वे स्नातक है।



सुश्री श्रीमानती साहा, (अवर श्रेणी लिपिक)की तैनाती 9 नवंबर 2018, को भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में हुई। सुश्री साहा भूगोल में परास्नातक है। उन्होंने इसके पूर्व उत्तरबंग क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक और पश्चिम बंगाल बिजली वितरण कंपनी लिमिटेड में काम किया।

सम्पादक मंडल की तरफ से

संस्थान के दिसम्बर माह का मासिक समाचार पत्र आपके सम्मुख प्रस्तुत है। इस अंक में संस्थान में हुई समस्त कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारियां प्रस्तुत है। इस माह संस्थान नये तैनात तकनीकी सहायक और अवर श्रेणी लिपिक को सम्पादक मण्डल के और से बहुत बधाईया और भविष्य के लिए शुभ कामनायें। सम्पादन मण्डल की सदैव यह कोशिश रहती है कि इस पत्रिका को अधिक से अधिक आकर्षक और विविधपूर्ण बनाया जाय और इसके लिए आपके सुझाव अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अतः इस पत्रिका को ओर भी आकर्षक एवं उत्कृष्ट बनाने में आप सभी के सुझावों का स्वागत है।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मोर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कासिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्था, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई-मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in